

श्री समयसार १३ मी गाथाका कणशका भावार्थ है. नीचे टीका है ने टीका. संस्कृत टीका है. अमृतयंत्राचार्य द्विगंबर मुनि उत्कृष्ट आत्माका प्रभाव अनुभववी उसकी टीका है. सूक्ष्म भात है.

क्या कहेते है ये देषो. सूक्ष्म विषय है. जैसे नवतत्त्वमें अेक जवको ही ज्ञानना भूतार्थ कहा है. क्या कहा ? भाए ! जवकी- आत्माकी वर्तमान पर्याय नाम अवस्थामें नवतत्त्वका भाव पर्यायमें भेदमें होता है. पण वो कोए सम्यग्दर्शन उनसे होता है अैसा नहीं. जवकी अेक समयकी वर्तमान पर्याय, अवस्था और पुण्य, पाप, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा ने मोक्ष अे पर्यायो है, अे नवतत्त्वमें तो पर्याय बुद्धिसे व्यवहारनयसे ये है पण जसको अपना कल्याण सम्यग्दर्शन प्रगट करना हो, धर्मकी पहेली सीढी, तो ये नवतत्त्वमेंसे भिन्न होकर, आहाहा ! आवी वात छे प्रभु !

आ बहारना धमाल ने बहारनी क्रिया तो जउसे होती है. अंदरमें राग आते है, शुभ राग, वो भी बंधका कारण है. सम्यग्दर्शनका वो कारण नहीं. आहाहा ! अे अईया नवतत्त्वमें नवप्रकारकी वर्तमान पर्यायना भेदोंमें अेक जवको ही ज्ञानना. आहा ! सामान्यरूप जे पर्यायमें आता नहीं कभी. आहाहा ! ध्रुव, ध्रुव, ध्रुव आनंदका पिंड अेकरूप स्वरूप उसको ज्ञानना अे भूतार्थ है. आहाहा ! अे त्रिकाणी यीजको अंतर्मुख होकर ज्ञानना वो ही भूतार्थ यीज है, सत्य यीज है. आहाहाहाहा ! है ? अेक जवको ही ज्ञानना, याहे तो संवर हो, निर्जरा हो, मोक्षकी पर्याय पण उसमें सामान्य जे जवद्रव्य है अेकरूप उसकी उपर नजर करनेसे अभेद यीजकी नजर करनेसे ये अभेद यीज अे ही भूतार्थ है. आहाहा ! आवो मार्ग छे.

( श्रोता:- अेकेय अक्षर समजाय अेवो नथी. ) है ! क्या कहा ? प्रभु तीन यार दिनसे तो चलते है ( स्पष्टीकरण ). नवतत्त्वमें जवकी अेक समयकी पर्यायको यहां नवतत्त्वमें जव गिननेमें आया है. पंडितज ! आ अमारे पंडितज आया, आ तो, भाए नथी आया, कुलयंदज ! ताव आयो बुभार है. है अे तो आया ने भाए कुलयंदज आते है. ताव आया बुभार आया.

आ आत्मा जे त्रिकाणी ज्ञायक स्वरूप ध्रुव स्वरूप है, उसकी वर्तमान पर्याय नाम अवस्था नाम हालतमें जे पर्याय है उसको यहां जव कहेनेमें आया है. और उसमें दया, दान, व्रत, भक्तिका भाव होता है, ये शुभकी अपनी योग्यतासे अपने काने अपने कारणे उत्पन्न होता है और हिंसा, योरी, विषय, जूठ, भोग, वासना अे पाप परिणाम पण अपने कानमें अपने कारणसे विकृत अवस्था उत्पन्न होती है और दो मिलकर आस्रव भी अपने कारणसे

અપને પર્યાયકા તે કાળ હૈ તો વો કારણે આસ્રવ ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઓર રાગમેં રુકના એ ભાવબંધ ભી અપને કારણસે ત્યાં ભાવબંધ ઉત્પન્ન હોતા હૈ. ઓર સંવર, એ અપની પર્યાયમેં શુદ્ધતા જો પ્રગટ હોતી હૈ એ ભી અપને કાળે, પવિત્ર સમ્યગ્દર્શન જ્ઞાનકી પર્યાય એ સંવર હૈ. એ અપને કાળે ઉત્પન્ન હોતી હૈ. નિર્જરા, એ ભી અપને કાળે વો શુદ્ધિસે વૃદ્ધિ હોતી હૈ એ ભી પર્યાયમેં અપને કાળે નિર્જરા નામ શુદ્ધિકી વૃદ્ધિ અથવા અશુદ્ધતાકા નાશ એ અપને કાળે નિર્જરા હોતી હૈ. ઓર મોક્ષ ભી અપને કાળે પર્યાયમાં કેવળજ્ઞાન હોકર ઉત્પન્ન હો. પણ એ નવપ્રકાર જો હૈ ઉસમેં આત્મા આયા નહીં, ત્રિકાળી. આહાહા ! આહાહાહા !

એ નવપ્રકારકો ભી છોડકર, હૈં ? ઉન નવ તત્ત્વમેં, એ પર્યાયકા નવપ્રકારકા તત્ત્વ નામ ભેદમેં એક જીવકો હી, એ સંવર કાળમેં ભી એક જીવ હી અંદર ત્રિકાળ હૈ તે ઉપાદેય હૈ. આહાહાહાહા ! નિર્જરાકે કાળમેં પણ ભગવાન એકરૂપ ચિદાનંદકી પાટ શિતળ પડી હૈ ધ્રુવ, વો એક હી ઉપાદેય હૈ, ઓર મોક્ષકી પર્યાય તો અભી નહીં પણ મોક્ષકી જે કેવળજ્ઞાન પર્યાય ઉત્પન્ન હોતી હૈ, યે ભી સદ્ભૂત વ્યવહારનયકા વિષય હૈ, ઉસકે આશ્રયસે સમ્યગ્દર્શન નહીં હોતા. આહાહાહા !

નવતત્ત્વમેં એક જીવકો હી અંતર્મુખ શુદ્ધ ચૈતન્યઘન ભગવાન, એકરૂપ ધ્રુવ સામાન્ય સદૈશ નિત્યાનંદ પ્રભુ એકરૂપ વસ્તુ જો હૈ, આહા ! એ હી જ્ઞાનના ભૂતાર્થ કહા. એને જાણ્યા હુવા વો વસ્તુકો ભૂતાર્થ કહા. આહાહાહા ! આવી ચીજ છે ભાઈ ! ધર્મની શરૂઆત પણ એસે હોતી હૈ. કોઈ આ ક્રિયા ને વ્રત કરના ને તપ કરના ને ભક્તિ કરના ને વો તો પર્યાયમેં ભેદ વિકારકા હૈ. આહાહા ! એ નવતત્ત્વમેં એક, ઓલા નવ અનેક હુઆ, પર્યાયની અવસ્થામેં અનેક ભેદ હુઆ, ઉસમેંસે એક જીવકો હી, એકાંત લિયા હૈ. આહાહાહા ! ત્રિકાળ અસ્ખલિત પર્યાયમેં ભી જિસકા આના નહીં હોતા. આહાહાહા ! એસી જો ચીજ નિત્યાનંદ પ્રભુ, વો હી એક જ્ઞાનના યથાર્થ, ભૂતાર્થ, સત્ય કહેનેમેં આતા હૈ. સમજમેં આયા ? એક બાત હુઈ. હવે દૂસરી, તીન બાત હૈ.

ઉસી પ્રકાર જેસે નવતત્ત્વકે ભેદમેંસે એકીલા જીવ ત્રિકાળ ઉસકા અવલંબન લેના, ઉસકા આશ્રય કરના વો હી ભૂતાર્થ હૈ. વો હી સમ્યગ્દર્શનકા વિષય હૈ. છત્તે સમ્યગ્દર્શનકા વિષય એકરૂપ ચૈતન્ય હૈ, છત્તે સમ્યગ્દર્શનકી પર્યાય એ સમ્યગ્દર્શનકા વિષય નહીં. આહાહાહા ! સમ્યગ્દર્શનકા વિષય જો ત્રિકાળી જ્ઞાયકભાવ હૈ એ પર્યાયકા વિષય પર્યાય નહીં. આહાહાહા ! બાપુ ! જનમ મરણ રહિત સમ્યગ્દર્શનકી ક્રિયા કોઈ અલૌકિક હૈ. આહાહા ! ઓર એ સમ્યગ્દર્શનકી પર્યાયમેં જ્ઞાયક ત્રિકાળકા શ્રદ્ધા જ્ઞાન હોતા હૈ, પણ વો ત્રિકાળી ચીજ વો પર્યાયમેં આતી નહીં. આહાહાહા ! આવું હવે ઝીણું !

ઉસી પ્રકાર એકરૂપસે પ્રકાશમાન આત્મા, આહાહા ! ભગવાન તો એકરૂપ ચૈતન્ય પ્રકાશ જ્યોતિ-પ્રકાશમાન જ્યોતિ આત્મા હૈ, ઇતની બાત. હવે એકરૂપસે પ્રકાશમાન આત્મા ઉસકે અભિગમકે ઉપાય, ઉસકો જ્ઞાનને કા ઉપાય, પ્રમાણ, નય, નિક્ષેપ હૈ. પ્રમાણકી વ્યાખ્યા કરેગા. દ્રવ્ય - વસ્તુ અને પર્યાય દોકા જ્ઞાન કરે વો પ્રમાણ હૈ. ઓર 'નય' 'બે' મેંસે એકકા - અંશકા વિષય કરે વો નય હૈ. ચાહે તો સામાન્યકા વિષય કરે, ચાહે તો વિશેષકા વિષય, પણ એક અંશ

आया, नयमें अेक अंश आया, प्रमाशमें ढे अंश साथमें आया. अैसा ज्ञाननेका उपाय है, वो भी विकल्पात्मक है. आहाहा ! वो भी आहाहा... प्रमाश, नय अने निक्षेप. निक्षेप नाम, नामसे ज्ञेय पदार्थ ज्ञानना, स्थापनासे ज्ञानना, योग्यतासे द्रव्यकी योग्यतासे ज्ञानना, और भावकी पर्यायसे ये ज्ञानना, ये ज्ञेयना जे यार भेद अे निक्षेपका भेद है. अे निक्षेपसे भी अपनेको ज्ञानना वो भी अेक विकल्प है. आहाहाहाहा !

ज्यां नवतत्त्वका भेद भी सम्यग्दर्शनका विषय नहीं, त्यां नय निक्षेप ने प्रमाश भी सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. आहाहा ! सूक्ष्म बात है भाई ! वीतराग मार्ग अनंत काण हुवा, आहाहा ! कभी अेने ध्यान दिया ही नहीं. आहाहा ! पाटणीज्ज ! बहारमां ने बहारमां भटक भटककर, आहाहा ! अंतर पाताणकूवा पडा है, अेक समयकी पर्यायके समीपमें, समीपमें सारा ध्रुव तत्व नित्यानंद प्रभु है, अे आ अभिगमका ज्ञाननेका उपाय है अे भी निश्चयसे अभूतार्थ है. क्या कहा ? प्रमाश, नय प्रमाश नाम ढे. द्रव्य ने पर्यायका ज्ञान साथ करे वो प्रमाश, पश वो विकल्पात्मक प्रमाश यहां लिया है. 'नय' त्रिकाणका अंश करनेवाला 'नय' अे निश्चय. आ वर्तमान पर्यायका विषय करनेवाला व्यवहार, पश ढेही विकल्पात्मक, रागात्मक लिया है. आहाहा ! और निक्षेप, अे तो ज्ञेयना भेद है. अे भी विकल्पात्मक निक्षेप, भाव निक्षेप भी विकल्पात्मक यहां तो है. आहाहाहा ! समजमें आया ? अर्थात् मेरी पर्याय शुद्ध पूर्ण है अैसा भाव निक्षेप भी भेदवाणी दशा है, तो वो भी विकल्प है. आहाहाहाहा ! ये निश्चयसे तो जूठा है. आहाहाहा ! अपना अनुभव करनेमें अे प्रमाश, नय, निक्षेप बिलकुल सहाय करते नहीं. आहाहाहाहा !

व्यवहार रत्नत्रयका राग अे भी अपना अनुभवमें बिलकुल सहाय करते नहीं, उसकी मदद नहीं, और उसको छोडकर अपना स्वभावमें दृष्टि करे तब सम्यग्दर्शन होता है. अैसे आ प्रमाश, नय, निक्षेपका ज्ञान ढे, पश वो त्रिकाणकी दृष्टि करनेसे अे अभूतार्थ है, भेद प्रमाश, सविकल्प प्रमाश, आ सविकल्प लेना. सविकल्प नय, रागवाणी नय, रागवाणा प्रमाश और रागवाणा निक्षेप, अे भी, आहाहाहाहा ! शायक त्रिद्वानंदकी दृष्टि अनुभव करने पर सम्यग्दर्शनका ध्येय ध्रुव उपर दृष्टि करनेसे अे नय निक्षेप प्रमाश भी जूठा है. आहाहा ! आवी वात छे. इज्ज तो धर्मनी पहेली ( सीढी ) सम्यग्दर्शन, जो के निश्चयसे तो यारित्र धर्म है, पश वो यारित्र धर्मका कारण वो सम्यग्दर्शन है, अेम लछअे ने ? यरितम् भल्लु धम्मो. आहाहा ! आत्मामें वीतराग पर्यायका जमना, आहाहा ! जमी जना आनंद आनंदकी दशा, अे वीतरागी पर्याय है. आहाहा ! वो भी अेक समयकी दशा है. उसका आश्रयसे भी सम्यग्दर्शन नहीं होता. आहाहा ! जीशी वात भाई ! अत्यारे तो गरभड बहु करी प्रभु ! अने दरकार कंछ केटलाकने तो पडी नहीं अंदर. जिसमें जन्म्या बस वो भक्ति ने मंदिर ने सवारमां स्तुति करना ने, शेठ ! बस ढे गया धर्म. ( श्रोता:- अे सरण पडे ) अे सरण पडे ? जेर छे अे सरण पडे. अे राग तो जेर है. यहां तो नय निक्षेप प्रमाशका ज्ञान भी अभूतार्थ, स्वरूपकी दृष्टि करनेमें अभूतार्थ है. आ वात है प्रभु. ( श्रोता:- भक्ति जेर कडेवाय ? ) भगवानकी भक्तिका भाव विषकुंभ, जेरका घडा है. ( श्रोता:- ये तो नयी बात ) मोक्ष अधिकार. अे मोक्ष अधिकार उसमें मोक्ष

अधिकारमें विषकुंभ कहा है, प्रभु तेरेको जबर नहीं, अमृतका सागर अंदर डोलते हैं नाथ ! अमृत स्वरूप अतीन्द्रिय आनंदनुं अमृत स्वरूप ध्रुव अंदर बिराजते हैं प्रभु ! उसकी अपेक्षासे शुभभाव भी ज़र है. आहाहा ! अरे उसको तो असत्यार्थ कहा, પણ नय निक्षेप ने प्रमाणसे ज्ञान करना वो भी असत्यार्थ ने अभूतार्थ है. आहाहाहा ! भाई ! आ तो मारग अंतरका है. आहाहाहा ! रागसे परसे उदास होकर अंतर ज्ञायकभावने पकडना, त्रिकाणी आनंदका नाथ उसको पर्यायमें पकडना ओ कोछ अपूर्व वात है. ओ अनंत काणमें किया नहीं कभी. आहाहा ! कडो पंडितज !

भाकी पंडिताछ भी अनंत बैर हुवा, मूर्खा भी अनंत बैर हुवा, रंक भी अनंत बैर हुवा, और राजा भी अनंत बैर हुवा, नारकी भी अनंत बैर हुवा, और नवमी ग्रैवेयकका देव उ१ सागरकी स्थिति अनंत बैर हुवा. आहाहा ! ओ सबका भेदका लक्ष छोडकर अपना यैतन्य भगवान, आहाहा ! ध्रुव ओकरूप यीज रहेनेवाली है, उसका आश्रय करनेसे ओ भूतार्थ यीजका आश्रय करनेसे सम्यग्दर्शन होता है. ओ सम्यग्दर्शन धर्म स्वरूपकी दशाका शरुआत है और उसमें पीछे आत्मा जो सम्यग्दर्शनमें जाननेमें आयाने अतीन्द्रिय आनंद, अतीन्द्रिय ज्ञान, अनंत अनंत शक्तिमें ओक ओक शक्ति अनंत प्रभुतासे भरी पडी है. आत्मा ओक है, अंदर शक्तियां अनंत है. गुण, गुण कडो के शक्ति कडो और ओक ओक शक्तिमें अनंती सामर्थ्यता पडी है, और ओकओक शक्तिकी अनंती पर्याय है, ये सबको भेदको छोडकर, आहाहा ! उसका ज्ञान आता है पहेले. जवेरातकी दुकानमें प्रवेश करते पहेले, अंगनमें जाडा रहेते है, जैसे नय निक्षेप प्रमाणसे आत्माको जानना ओ अंगनमें आया है. अंदरमें प्रवेश करनेमें ओ काम नहीं करते. कल आया था आपणे बहेनना वयनोमां, के गुफामें जाना हो, गुफामें त्यां लग वाहन काम करे जानेका, પણ अंदर जानेमें ओ वाहन काम नहीं करे, छोड देना ( पडे ). आहाहा ! ओम आत्माको जाननेमें विकल्प पहेले आता है, नय, निक्षेप, प्रमाणका, પણ अंतर अनुभवकी गुफामें जानेमें ओ काम नहीं करते कुछ.

वो कहा था ४८ गाथा है, संस्कृत टीका है जयसेन आचार्यकी, उसमें ये लिया है. अंतर शांति समाधीरूपी गिरिकी गुफामें प्रवेश करते है ऐसा पाठ है. यहां है पुस्तक ? नहीं. श्रीमद् जेवुं होवुं जोछओ मोटुं. नहीं ? काले आव्युं' तुं अर्ही. ४८ गाथा है समयसारकी उसकी टीका है जयसेन आचार्यकी, उसमें ऐसा लिया है, के भगवान आत्मा अपना आनंदका दुंगर अतीन्द्रिय ज्ञानका सागर उसमें प्रवेश करनेमें, आहाहा ! ओ गिरिरूपी गुफा, ओ समाधि शांति वीतरागता त्यां काम करती है. आहाहा.. त्यां राग आदि, निमित्त आदि, कोछ काम नहीं कर सकते. आहाहा ! आवी वात भाछ ! आकरी पडे छे ने तेथी सोनगढने ओम कडे छे ओकांत छे, ओकांत है कडे छे. कडो प्रभु तुम પણ भगवान है बधा भीज रीते कहेते है ने आ वात भीज पद्धतिसे कहेते है, ओ कडे उसमें कोछ विरोध करनेकी जरुर नहीं है. उसकी बुद्धिमें ओ आया वो कडे પણ, सत्य तो कोछ त्मिन्न यीज है. आहाहा... "जामें जितनी बुद्धि है छतनो दिये बताय, वांको बूरो न मानीओ और कहांसे लाये" आहाहा ! आंही कहेते है, के निश्चयसे तो प्रमाण, सारा द्रव्य पर्यायका ज्ञान करनेवाला प्रमाण सविकल्प, 'नय' प्रमाण हो प्रकारका है. ओक सविकल्प

प्रमाण, अेक निर्विकल्प प्रमाण. आ सविकल्पकी यहाँ बात है. नय दो प्रकारकी है. सविकल्प राग सहित अने अेक राग रहित. यहाँ नय राग सहितकी व्याख्या है. 'निकेप' अे ली विकल्प है. जरी यार भेद पाडना. आहाहाहाहा ! भगवान स्थापना निकेप है यहाँ, उसके ( उपर ) लक्ष ज्ञाना ये शुभभाव है. समजमें आया ?

वो कहा था अेक बैर बहोत प्रश्न हुवाने त्यां त्यां अमारें संप्रदायमें बहोत प्रश्न होंते थे ने ? ८उकी साल है ८उकी. कितना वर्ष हुवा ? ५१. तो अेक शेर था. अैसे कहेते थे स्थानकवासी, थे हम ली उसमें थे ने ? पैसावाणा था. ७० वर्ष पहेले की बात है. उसके पास दस लाख रुपिया. यालीस हजारकी उपज थी, अे वपते हों, अत्यारे तो पच्चीस त्रीस गुणा हो गया, किंमत घट गध. अे वपतका अेक लाख, अलीका पच्चीस लाख, तो अेक दके उसने अैसा कहा कि जब लग मिथ्यादृष्टि है तबलग मूर्तिकी सेवा आदि आते है. सम्यग्दृष्टि होने के पीछे मूर्तिकी सेवा नहीं, अे अेशे कहा. में क्रीधुं अैसा है नहीं. सूनी, के जब आत्माका भूतार्थ जो त्रिकाण यीज है उसका जयां सम्यग्दर्शन हुवा तो उसकी साथ भावश्रुतज्ञान हुवा, गांगुलीञ्च ! सूक्ष्म विषय है थोडा अभ्यास करना पडेगा थोडा. ओला होमियोपेथीना बहोत अभ्यास किया है ने ? नरम भाषास है. आहाहा !

तो कहा के जब आत्मामें सम्यग्दर्शन होता है, अेकरूप चिदानंदकी दृष्टि ने अनुभव तब उसको भावश्रुतज्ञान होता है. भावश्रुतज्ञानका दो भेद पडते है. निश्चय ने व्यवहारनय. वो भावश्रुतज्ञानका अेक भेद व्यवहार, और निकेपका अेक भेद स्थापना, अे व्यवहारनयका विषय समकित्तीको ही होता है. है शुभराग भले, समजमें आया ? बडी चर्चा होती थी. पण में क्रीधुं भाँ हम अैसा, मैं इसमें आ गया है माटे अैसा मानना अैसा हमारे नहीं है. आ तो अंदरमें कसोटीसे सत्य हो अे मानेगा हम तो, हम संप्रदायमें रहा माटे संप्रदायकी दृष्टि हमारे मानना अे हमारे नहीं, हमारे तो सत्य कसोटी पर आते है अे मानना पडेगा. तो भरेभर तो भावश्रुतज्ञानीको निश्चय ने व्यवहार श्रुतज्ञानका दो अवयव है. श्रुतज्ञान अवयवी और नय अवयव. तो श्रुतज्ञानीको ही व्यवहारनय होता है. है भले विकल्प, समजमें आया ? अने अे श्रुतज्ञानीको ही निकेप उपर दृष्टि जाती है, विकल्पसे, तो यथार्थमें समकित्तीको ही व्यवहारसे स्थापना निकेप पूज्य है, लालचंदभाँ ! आहाहाहा ! भाँ ! मारग आ है कोठ गरबड आडी अवणी करे तो ये नहीं याले आंड़ी है ? आता है श्रुतज्ञानका भेद व्यवहारनय अेक आती है. और अे शुभरागरूप ली है. और उसका विषय भगवानकी प्रतिमा ली है. पण आता है. पण वो सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. आहाहाहा ! आवी वात छे शेर. शेर तो पढया है त्यां कारंजमें बहोत. नहीं पढया है. आहाहा ! पण आ पढया नहीं, शेर आवी वात छे. आहा !

अंदरमें कहेते है, कि प्रमाण नय ने निकेप जे, पहेला क्या था, कहेते थे अेकरूपसे प्रकाशमान आत्मा भगवान तो अंदर अेकरूप प्रकाशमान है चैतन्य. उसमें उसके जाननेका उपाय अनेक. प्रमाण-नय-निकेप. आहाहाहा ! अेकरूप त्रिकाणी परमात्मा भगवान प्रकाशमान परमात्मा है. उसमें उसको जाननेका उपाय अनेक है. पण अे अनेक उपाय पण अभूतार्थ है.

आहाहा ! हा ! ओ कहेना, है के नहीं ? आहाहा ! ओ उपाय, ओ व्यवहारसे जाननेका उपाय, ओकरूपको जाननेमें अनेकसे उपाय, ओ ओकरूप जाननेकी अपेक्षामें अनेकरूपे जाननेका भाव अभूतार्थ है. अरे प्रभु ! आवी वात छे भाछ ! आहाहा... पंडितज्ज.

हवे प्रमाणाकी व्याख्या करते है. "उनमें भी यह आत्मा ओक ही भूतार्थ है." प्रमाणा नय निक्षेपका जाननेका भाव आता है विकल्पात्मक राग स्वरूप उसमें भी यह आत्मा ओक ही भूतार्थ है. आहाहाहा... ये नय निक्षेप प्रमाणाका विकल्प है उससे त्मिन्न भगवान, उपाय जाननेका है, उससे भी त्मिन्न है. आवी वात छे भाछ ! शुं थाय ? सम्यग्दर्शनकी जगतने किंमत नहीं. शुभभावनी किंमत ने बहारनी आ धूणनी ने पैसा ने आबरु ने शरीर सुंदर ने मकान मोटा इज्जरा होय, पयास पयास लाभना मंदिर ने, मकान अपना रहेनेका, है ने गोवामां, है ने ? गोवामां ओक था. गुजरी गया बियारा इमणां. लडका है दो, दो अबज यालीस करोड बहोत रुपिया था, बहोत पैसा पण आभिरमें ओक सेकंडमें दो- यार -पांय मिनिटमें औसा दुःभावा हुवा, कुछ दुभावा है औसा कडा ने दाक्टरको बुलाओ, बस दाक्टरको बुलाके आते थे ओ पहेलां यले जाव परलोकमें रभउनेको. शांतिलाल पुशाल !

( श्रोता:- पैसा था तो क्युं गुजर गया ? ) पैसा था पडया रखा पैसा, सामे यालीस लाभका मकान था रहेनेका, यालीस लाभका गोवामें है. दस दस लाभका दो है. और यालीस लाभका ओक. सांछठ लाभका मकान है गोवामें. उसका लडका आयाने. ( श्रोता:- सीतेर लाभनुं मकान मुंभछमां रमणिकभाछनुं ) आ रमणिकभाछनुं ल्योने अमारे, अमे आम उितरीओ छीओ ने मुंभछ ! कछ तिथि ८७, शरीरमें जन्मकी थी ने ८७ वर्षकी तो आमोदवाणा है ने आमोद. अमारे पालेज पासे आमोद है, गुजराती तो त्यांना रहेनेवाला रमणिकभाछ है, दो भाछ है, तो ओक रहेनेका मकान ७० लाभका है. पांय छ करोड रुपिया है, नरम माणस है, गुजराती है अमारे पालेजमें दुकान थी ने इमारी, तो साथमें आमोद था. तो इम तो आमोदको जानते थे. कीधुं त्यारे अमे आमोदना रहीश है. बडी दुकान है. कांछक नाम है कांछक पेढीनुं. ( श्रोता:- रोचक छन्दस्ट्रीज ) आपणने याद रहे नहीं, तो ओ मकानमें अमे उितरे थे. सीतेर लाभका ओक मकान, उसमें क्या आया ? धूणमें. मकान मकानमें रहा जउमें ओ तेरी यीजमें कहां आया वो ? तुम त्यां कयां रहेते है ? तुम तो अपना आत्माका स्वभावमें रहेनेवाली यीज है. आहाहाहा ! विभावमें आना ये भी तेरी यीज नहीं. ये तो परदेश है. कल आया था. भजनमें भी आया था. आहाहा ! शुभ ने अशुभ राग होता है ये परदेश है प्रभु ! तेरा देश नहीं. आहाहाहा ! स्वदेश तो आनंदनो नाथ प्रभु ! अतीन्द्रियआनंद, अतीन्द्रियज्ञान, अतीन्द्रियप्रभुता पूर्ण पूर्ण पूर्ण पूर्ण छंद, औसी पूर्ण शक्तिका भंडार भगवान ओ परमात्मा ओ तेरा स्वदेश है. आहाहाहा !

यहां कहेते है. ये प्रमाणा नय ने निक्षेप भी ओ निश्चयसे तो जूठा है. आहाहा ! तो क्युं आते है ? के आते है. सर्वज्ञ परमात्मा जिनेश्वरनाथ, जो आत्मा कहेते है अने दूसरा आत्मा कहेते है अज्ञानीओ उससे त्मिन्न होने के, यथार्थ आत्मा परमेश्वरे क्या कडा, वो माटे नय निक्षेप प्रमाणा आता है. समजमें आया ? पण आता है, पण है अभूतार्थ. ( श्रोता:- शुद्धता अशुद्धताको बताते नहीं ? ) बताते नहीं. कडा ने, आते है, आ कया यीज है ओम जाननेको आते

હૈ, પણ અંદર જાનનેકી વહાં જાના ઉસમેં વો નય નિક્ષેપ પ્રમાણ કુછ કામ નહીં કરતા. આહા ! ( શ્રોતા:- રાસ્તા બતાકર છૂટ જાતે હૈ. ) રાસ્તા બતાયા નહીં હૈ એણે, આહાહા ! દેખા તો અપની પર્યાયસે અભેદમેં જાકર દેખા, ઉસને દિખાયા હૈ, ભેદસે દિખાયા નહીં.

કહેનેમેં આતા હૈ ઐસા. ૮ મી ગાથામેં આયાને ? કે સંતો આચાર્યો પણ આત્મા એકરૂપ હૈ ઉસકો સમજાને કે કારણ, દર્શન-જ્ઞાન-ચારિત્રકો પ્રાપ્ત હો યે આત્મા ઐસા સંતો ભી વ્યવહારમેં આકર કહેતે હૈ. વિકલ્પમેં આકર સંતો, યહાં કેવળકી બાત યહાં હૈ નહીં, કારણકે કેવળી તો એ વખતે થા નહીં, સંત થા સમયસાર વખતે. તો ઉસકી બાત કહેતે હૈ, કિ સંત ભી અપના સ્વરૂપમેંસે બહાર નિકલકર જરી વિકલ્પ આતા હૈ વ્યવહાર, તો વ્યવહારમેં સમજાનેકો દુનિયાકો કહેતે હૈ કે 'આત્મા' તો વો 'આત્મા' 'સમજે નહિ' તો ઉસકો ઐસે બતાવે કે દર્શન જ્ઞાન ચારિત્રકી પર્યાયકો પ્રાપ્ત હો યે "આત્મા". એ ભી વ્યવહાર હુવા.

ઐસા વ્યવહારસે સમજાતે હૈ, પણ વ્યવહારકા અનુસરણ સમજાનેવાલેકો નહીં કરના અને કહેનેવાલેકો ભી વ્યવહારકા અનુસરણ નહીં કરના. આહાહાહા ! આવી વાત છે. કહો ભાઈ ! તુમ પ્રભુ છો હોં ! તેરી પ્રભુતા વાણીમેં નહીં આતી નાથ. આહાહા ! યે તેરી પ્રભુતા નય નિક્ષેપ કે પ્રમાણમેં, સવિકલ્પમેં બી આતી નહીં નાથ. અરે તુમ પામર નહીં પ્રભુ. તું અલ્પજ્ઞ નહીં, તું યે રાગ તેરા નહીં, રાગ તેરેમેં હૈ નહીં. આહાહા ! પ્રભુ તુમ તો સર્વજ્ઞ સ્વભાવી હૈ ને અંદર. એકીલા જ્ઞાન સ્વભાવી કહો 'જ' સ્વભાવી કહો કે સર્વજ્ઞ સ્વભાવી, આહા... સ્વભાવ હોં, પર્યાયમેં ભલે અલ્પજ્ઞતા હો પણ સ્વભાવ તો ઉસકા સર્વજ્ઞ સ્વભાવી પ્રભુ હૈ. આહાહા... ઇસકી પ્રભુતામેં કભી ખોડ-ખાંપણ ઘટવધ હુઈ નહીં. ઐસા ત્રિકાળી ભગવાન આત્મા ઉસકા અનુભવ કરને પર આ પ્રમાણ નય નિક્ષેપ જૂઠા હોતા હૈ. ઉનમેંસે યહ એક આત્મા હી ભૂતાર્થ હૈ. આહાહાહા... એક જ્ઞાયકભાવ યે સત્ય વસ્તુ હૈ, એ દૈષ્ટિમેં લેના. આહાહા !

પ્રમાણ નય નિક્ષેપકા ભી જ્ઞાન વિકલ્પાત્મક હૈ, એ દૈષ્ટિમેં ન લેના. આહાહા ! આવી વાત છે. હવે 'ક્યોંકિ જ્ઞેય વચનકે ભેદો સે, જ્ઞેય ઔર વચનકે ભેદોસે પ્રમાણ આદિ અનેક ભેદરૂપ હોતે હૈ.' હવે ઉસમેંસે સૂક્ષ્મ વિષય હૈ ભાઈ આ ગાથા, પહેલે પ્રમાણ દો પ્રકારકા હૈ પરોક્ષ અને પ્રત્યક્ષ. પ્રમાણકા દો ભેદ હૈ, એક પરોક્ષ ને એક પ્રત્યક્ષ. ઉપાત્ત, અનુપાત્ત પદાર્થો દ્વારા પ્રવર્તે એ પરોક્ષ હૈ. ઇન્દ્રિય અને મન દ્વારા પ્રવર્તે ઔર પ્રકાશ અને ઉપદેશ દ્વારા પ્રવર્તે એ પરોક્ષ હૈ. આહાહા ! ઇન્દ્રિય અને મન દ્વારા જ્ઞાનકા પ્રવર્તન હો એ પરોક્ષ હૈ ઔર પ્રકાશ અને ઉપદેશ દ્વારા હો એ ભી પરોક્ષ હૈ. આહાહાહા ! કયા કહા ? કે સર્વજ્ઞ પરમાત્માકી દિવ્ય ધ્વનિ આઈ, ખ્યાલમેં આયા લક્ષમેં, પણ વો ભી પરોક્ષ જ્ઞાન હૈ, ઇન્દ્રિયસે ખ્યાલમેં આયા ને ? નિમિત્તસે ખ્યાલમેં આયા ને ? પરોક્ષ હૈ, અને સવિકલ્પ પરોક્ષ જ્ઞાન હૈ એ. આહાહાહા ! ઔર કેવળ આત્માસે હી એક ભગવાન આત્માસે હી પ્રતિનિશ્ચિતરૂપ પ્રતિ નામ ખરેખર રૂપસે પ્રવૃત્તિ કરે, સો પ્રત્યક્ષ હૈ. અપના આત્મા કે આશ્રયસે જો જ્ઞાન કામ કરે યે પ્રત્યક્ષ હૈ.

પ્રમાણ જ્ઞાન હૈ, વહ જ્ઞાન પાંચ પ્રકારકા હૈ. પહેલા બે ભેદ ક્રિયા, પરોક્ષ ને પ્રત્યક્ષ. એટલા ભેદ ક્રિયા પણ હવે ઉસકા ભેદ, જ્ઞાન પાંચ પ્રકારકા હૈ. એ પ્રમાણકા ભેદ હૈ. મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન, મન: પર્યયજ્ઞાન અને કેવળજ્ઞાન ઉસમેં મતિ ને શ્રુતજ્ઞાન પરોક્ષ હૈ, ક્યોંકિ ઇન્દ્રિય

ने मन द्वारा प्रवर्तता है. अवधि अने मनःपर्ययज्ञान विकल प्रत्यक्ष है थोडा प्रत्यक्ष है. आहाहा ! समझमें आया ? और केवणज्ञान सकल प्रत्यक्ष है पूर्ण केवणज्ञान तो संपूर्ण. छसलिये दो प्रकारका प्रमाण है.

ये में, दोका दोनोमें दोका प्रमाता जाननेवाला प्रमाणज्ञान और प्रमेय ज्ञानका विषय प्रमेय, अे भेदका अनुभव करने पर भूतार्थ है, अे पर्यायमें है. प्रमाण, नय, प्रमाणका विषय परोक्ष प्रत्यक्षका पर्यायमें आता है, सत्यार्थ है. पर्यायनी अपेक्षाअे सत्यार्थ है. केवणज्ञान केवणज्ञाननी अपेक्षाअे है अे सत्यार्थ है. परोक्षज्ञान भी है अे वर्तमान है. अे पण सत्यार्थ है. और जिसमें सर्वभेद गौण हो गये है. आहाहाहा... ये परोक्ष ने प्रत्यक्षका प्रमाणका भी भेद लक्ष छोड दिया जिसने, उसका नाम गौण करके... आहाहा...

शीरा होता है डलवा तो उसकी विधि क्या है, डलवा करनेकी ? के पहेले आटा धीमें शेकते है धीमें. पीछे सक्कर और गुडका पानी नाभते है, पण कोछ अैसे माने के आ तो धी पी जता है आटा, तो हमारे धीका बयाव करना है, तो क्या करना है तेरे ? तो पीछे गुडका पानी नाभना है तो पहेले गुडका पानीमें आटा शेको, पीछे धी नाभो. शीरा नहीं होगी. अे लुपरी नहीं होगी, भबर नहीं तने. गुमडा उपर होती ने पोटीस, क्या कहेते है. ? पोटीस पोटीस नहीं होगी. क्योंकि पोटीसमें तो बहोत थोडा धी विशेष पडे नहीं ने थोडा पड्या विना रहे नहीं. अे अमारी काठियावाडी भाषामें जतु-वणतुं धी अैसा सूना है आपणे कांछ किया नहीं. बाछयुं कहेता डोय के जतुं वणतुं धी नाभजे. आ पोटीस उपर. जतु-वणतुं अेटले धी थोडुं पडे अने बिलकुल न पडे अेम नहीं. आमां तो धी तो पीछेसे नाभना है. पहेले आटा मोंधा पडता है, मोंधी यीज है धी में आटा शेकना तो धी पी जता है. मोंधा पडता है, अे करतां पहेले आटाको गुडका पानीमें शेको. पीछे धी नांभो, पोटीस नहीं होगी. तेरा त्रण्येय जयेगा. क्या त्रण्येय ? आटा, शक्कर ने धी, नकामा जयेगा तेरे. अेम भगवान आत्माको अंतर जाननेमें बहारका साधन तेरे सरण पडे, पण उससे नहीं होगा भाव, भव भ्रमणका भाव होगा भाछ ! आहाहाहा ! अने आ मोंधा पडे अंटरधी, आहाहा... अंटरमें जाना विकल्प भी काम न करे त्यां प्रमाणका ज्ञान भी काम न करे त्यां. आहाहा ! अैसी मोंधी यीजमें पहेलेसे कोछ व्रत नियम कर लो और पीछे सम्यग्दर्शन होगा, धूणमें नहीं होगा. धूणमेंका अर्थ क्या ? पुण्य, पुण्यानुबंधी भी पुण्य नहीं होगा. पापानुबंधी पुण्य होगा तेरे. आहाहाहा ! अरेरे ! आ यीज ज दुनियाने मणी नथी. आहाहा... सत्य बात सूननेमें मिलती नहीं. आहा !

यहां अे कहेते है कि अे सर्व जिसमें सर्व भेद गौण हो, प्रत्यक्ष ने प्रमाण, अे छन्द्रियसे ने प्रकाशसे जाननेमें आये ये परोक्ष और सीधा आत्मासे जाननेमें आवे अैसा प्रत्यक्ष. अे विकल प्रत्यक्ष, थोडा प्रत्यक्ष ने सकल प्रत्यक्ष, पण अे सब भेद पर्यायका भेद है वो तो. सबको गौण करके, अभाव करके नहीं किया है. है ? पण उसका लक्ष छोडकर, आहाहाहा... भेद सर्व भेद गौण हो गये अैसे अेक जवके स्वभावका अनुभव करने पर, आहाहा... अे परोक्ष अने प्रमाणका भेदका ज्ञान विकल्पसे होता है. पण उसको गौण करके, उसका लक्ष छोड करके भगवान आनंदका नाथ प्रभु अंटर है, अभेद यीज है उसका अनुभव करने पर यह सब गौण हो जते



હૈ. ઉસકી મુખ્યતા નહીં રહેતી. આહાહાહા ! સમજમેં આયા ? અરે ભાઈ ! પરમાત્માનો મારગ બહુ સૂક્ષ્મ હૈ. અને યે સમ્યગ્દર્શન કયા ચીજ હૈ, અને કૈસે પ્રાપ્ત હો બડી સૂક્ષ્મતા હૈ ભાઈ, એ કોઈ એસા ક્રિયા ધામધૂમ હા-હો ને હો-હા ગજરથ ચલાયા ને રથ બનાયા ને ૫૦ - ૫૦ લાખકા મકાન મંદિર બનાયા માટે ધર્મ હો ગયા ?

( શ્રોતા:- વો ભી એક રાસ્તા હૈ. ) બિલકુલ નહીં રાસ્તા હૈ રખડનેકા. કહા નહીં, મુનિકો જે આત્માકા અનુભવ હૈ શાંતિ હૈ તીન કષાયકા અભાવ હૈ, તીન કષાયકા ઉસકો ભી જે શુભરાગ આતા હૈ એ જગપંથ હૈ. સમજમેં આયા ? એસા બતાયા થા, કહા હૈ ને ? જગપંથ, મોક્ષદ્વાર, મોક્ષદ્વાર સમયસાર નાટક. લ્યો એ જ પાનું આવ્યું ૪૦ મો શ્લોક. “ તા કારણ જગ પંથ એહ ” આહાહાહા... આત્માકા આનંદકા અનુભવ હૈ, સમ્યગ્દર્શન સહિત ચારિત્ર ભી હૈ પણ જો વિકલ્પ આતા હૈ પંચમહાવ્રતકા, આહાહાહા... એ તા કારણ જગપંથ એ, એ રાગકા વિકલ્પ યે જગપંથ નામ સંસારકા પંથ હૈ. આહાહા ! “ તા કારણ જગ પંથ એહ, ઉત્ત શિવ મારગ જોગ ” અંતરમેં આનંદમેં વિકલ્પ રહિતકા રમના યે શિવ મારગ હૈ, આ સંસાર હૈ. મુનિ સચ્ચા સંતકી બાત હો, એકીલા દ્રવ્યલિંગી નહીં. જિસકો આત્માકા જ્ઞાન હુવા હૈ. અનુભવ હૈ ઔર સ્વરૂપમેં રમણતાકા ચારિત્ર ભી હૈ પૂર્ણ નહીં વો કારણ પંચમહાવ્રતકા વિકલ્પ ૨૮ મૂળ ગુણકા વિકલ્પ, ભક્તિ આદિ ભગવાનકી વિનય આદિકા વિકલ્પ આતા હૈ, પણ હૈ જગપંથ. ( શ્રોતા: પંડિત બનારસીદાસને લિખા હૈ ) કળશામેં હૈ. કળશામાંથી નિકાલા હૈ. ( સમયસાર કળશમાંથી )

શેઠ એમ કહેતે હૈ કિ આ પંડિતકા લખાણ હૈ ને, પણ એ કળશામેંસે નિકાલા હૈ. આહાહા ! સ્પષ્ટ કરાતે હૈ શેઠ ! આહાહા ! એ બનારસીદાસ ઉસમેંસે રાજમલકી ટીકામેંસે આ સમયસાર નાટક બનાયા હૈ. રાજમલકી ટીકા હૈ ને કળશકી ઉસમેંસે આ બનાયા હૈ. અક્ષરે અક્ષર ઉસમેંસે લિયા હૈ. રાજમલક ! જૈન ધર્મકા મર્મી, ઉસને આ બનાયા હૈ આ ઉસમેંસે આ સમયસાર નાટક બનાયા હૈ. આહાહાહા ! અરેરે ! ઉસકો મોંઘા પડે. મોંઘા કહેતે હૈ કયા કહેતે હૈ ? મહેંગા પડે માટે પંડિતકા હૈ એમ કરકે નિકાલ દેતા હૈ. અરે ભગવાન ! આ તો બહેનકા વચન હૈ ને દોપહરકો વાંચતે હૈ ઉસકી ભી ટીકા હો ગઈ. આહાહા ! પણ બહેને તે અંતરમેંસે અનુભવમેંસે વાણી આઈ વો વાણી ક્રિયા હૈ. ટોડરમલે જે મોક્ષમાર્ગ બનાયા તો મોક્ષમાર્ગ કયોં નહીં વાંચતે. સમજમેં આયા ? તો વાણી બહેનકી આઈ હૈ યે સાર, સાર, સાર તત્ત્વસે ભરા આયા હૈ. વિસ્તાર થા વો તો છોડ દિયા પીછે. તો વો ભી તત્ત્વકી બાત યે યથાર્થ દૈષ્ટિ અનુભવપૂર્વક આઈ હૈ. અરે પ્રભુ ! એની ટીકા કરે, કે ચંપાબેનકો ચઢા દિયા ને પગે લાગેગા ને એસા કરેગા, અરે પ્રભુ શું કરે છે. ભાઈ ! પંડિતાઈ કામ ન કરે પ્રભુ ! સમજમેં આયા ? કૈલાસચંદજીને લિખા હૈ દેખા હૈ ? ખબર હૈ ! પ્રભુ ! એ અનુભૂતિ કયા ચીજ હૈ નાથ તેરે. આનંદકા અનુભવમેં જો બાત આતી હૈ, ઉસમેં જો બાત આતી હૈ યે યથાર્થ બાત હૈ. યાહે તો સિદ્ધકા સમકિત હો ને યાહે તો તિર્યંચકા સમકિત હો. હૈ ? એ આતા હૈ રહસ્યપૂર્ણ ચીટીમેં, દો હી સરખા હૈ, સ્થિરતા ચારિત્રમેં ફેર હૈ. પણ દૈષ્ટિકા વિષય અને દૈષ્ટિકા જ્ઞાન જો યથાર્થ હુવા ઉસમેં જો કથન આતા હૈ વો યથાર્થ કથન આતા હૈ. આહાહા.. શું થાય ? માણસને કાંઈ પંડિતાઈનું બહુ ભણ્યા હોય ને ગણ્યા ન હોય, બોલતા આવડે ને બહુ, તો એ જ્ઞાન હૈ ( એમ માને છે ). આહાહા !

અહીંયા તો ભગવાન આત્મા, કહાને ? પ્રમાણકા ભેદકો ગૌણ કરકે, આહા... એક જીવકે સ્વભાવકા અનુભવ કરને પર, એક જીવકી અનુભૂતિ, ત્રિકાળી સ્વભાવકી અનુભૂતિ હોને પર એ ભેદ એ અભૂતાર્થ હૈ. પ્રમાણકા ભેદ જૂઠા હૈ. તો રાગ અને દયા દાનના વિકલ્પકી બાત કયા કરના ? આહાહા ! ભાઈ મારગ આકરો છો. ભાવદિપિકામ્, પંડિતજી, ભાવદિપિકામ્ દીપચંદજી લિખ ગયા હૈ. દીપચંદજી ભાવદિપિકા, પંચસંગ્રહ હૈ અધ્યાત્મ, નથી આવ્યું અહીંયા ? અને એક ભાવદિપિકા હૈ ઉસમ્ લિખા હૈ કે અરેરે મ્ દિખતા હું તો લોગોંકો આગમ અનુસાર શ્રદ્ધા નહીં દિખતી મેરે. લોકો હૈ નામ ધરાવનારા શ્રાવક ને સાધુ ને પણ આગમ અનુસાર જે શ્રદ્ધા એ હમકો નહીં દિખતી ઉસીકે પાસ. ઔર મ્ કહેતા હું સત્ય તો સૂનતે નહીં. આ કયા ? આ કયા ? તો મ્ લિખ જાતા હું કે મારગ આ હૈ. આહાહા ! ભાવદિપિકામ્ હૈ. પંડિતજી ? ભાવદિપિકામ્ હૈ, સબ દેખ્યા હૈ ને ? હજારો શાસ્ત્રો દેખા હૈ. હજારો, હજારો શું લાખો શાસ્ત્રો દેખા હૈ અહીં તો. દુપ ની સાલસે સારા અભ્યાસ તો હૈ દુપ હૈ ? ( સંવત ) ઉપ ને ૪ ઓગણ ચાલીસ ને ૩૦, ઓગણ સીતેર. સીતેરમ્ એક કમ. ઇસમ્ તો હમ દુકાન પર હમ શાસ્ત્ર અભ્યાસ કરતે થે. ઘરકી પિતાજીકી દુકાન થી. નિવૃત્તિ થી બહોત, પહેલે પણ સ્થાનકવાસી થા, ચેતાંબર થા, સ્થાનકવાસી. આહાહા !

એમાં જ્યાં આ સમયસાર ( સંવત ) ૭૮મ્ મિલા. આહા ! વાહ ! “સિદ્ધ હોનેકી ચીજ આ હૈ.” કીધું મ્ તો સંપ્રદાયમ્ કહે દિયા થા. દામોદર શેઠ વિરૂદ્ધ થા. તત્ત્વસે અનજાન એનેય કહે દિયા. શરીર રહિત હોનેકી આ ચીજ હૈ. પણ એ વખતે તો ઉસમ્ ( સંપ્રદાયમે ) થા તો હરકત નહીં ને. આપણા મહારાજ ને ? પણ ( સંપ્રદાય ) છોડી દેશે એની એને કાંઈ ખબર નહીં. શેઠ થા બડા વો. મોટા અમલદાર ઉસકી પાસ આતે થે, એ વખતે દસ લાખ. પચીસ ત્રીસ ગુણા ગણો અત્યારે ઇતના પૈસા ઇતના, ઘર આખા, અપનેમ્ એક સારા ગામ દસ હજારકી પેદાશવાળા, એ વખતે દસ હજાર એટલે પચીસ ગુણા ગણો. ઔસા ગામ ઘરમ્ થે. ગામધણી થા, ચાલીસ હજારકી ઉપજ થી. સ્થાનકવાસી હૈ દામનગર. અમારા સંપ્રદાયકા ગામ થા વો. તો વો એમ કહેતે થે, આહાહા... ભગવાનકા દર્શન કરે તો, યે તો મિથ્યાદૈષ્ટિ હોય તો કરે મૂર્તિકા દર્શન. કીધું નહીં. સમ્યદ્દર્શન હુએ પીછે ભાવશ્રુત આતા હૈ. એ ભગવાનકા દર્શન કરતે હૈ. સમજમ્ આયા ? આહાહાહા !

શાસ્ત્ર તો ત્યાં ભી થા બહોત, ઉસકે પાસ દિગંબર શાસ્ત્ર થા. તો ત્યાં પહેલે વાંચ્યા ૭૮ મ્ તો ઉસકો કહા, “આ શાસ્ત્ર શેઠ સિદ્ધ હોનેકી આ ચીજ હૈ” આ અશરીરી હોનેકી આ ચીજ હૈ. એ તમારા બત્રીસ ફત્રીસ શાસ્ત્ર ને પીસ્તાલીસ હૈ સબ દેખા થા હમને તો કરોડો શ્લોકો દેખે થે. પણ એ વખતે તો ઉસમ્ થા ( સંપ્રદાયમ્ ) ત્યારે હમારા થા મહારાજ હૈ કાંઈ હરકત નહીં. કાંઈ પણ વાત કરેગા જો વિશેષ હમકો વિરોધ તો હમ સંપ્રદાય છોડ દેગા, ઉસકો શેઠકો સબકો બીક લગતી થી મેરી, મ્ કોઈ આ ગયા માટે મ્ સંપ્રદાયકો માનતા હું ઔસી ચીજ નહીં. મેરે તો અંદરમ્ યથાર્થ આના હો તો મ્ માનતા હું. તો યે ઔસે કહેતે થે કિ નહીં, આ જ મારગ સચ્યા હૈ સમયસાર, પીછે સચ્યા કહેતે થે હમ કહેતે થે, ( ઉસને ) પીછે ભૂલ નિકાલા. સમયસારમ્ ભી ભૂલ હૈ... છોડ દિયાને બસ આ તો ઉસમ્ ભી આ જીવ તત્ત્વમ્ ભૂલ હૈ ને અજીવમ્ હૈ ને

આસ્રવમેં યે હૈ ને, તમે દેખ્યા નહીં, દામોદર શેઠ ? એના દીકરાની વહુ નહીં તમારે ત્યાં રાજકોટ, શું નામ ? આંહી, ત્યાં આપણે મકાન હતું ને એની પાછળ હતું. આ ભાઈનું મકાન નહીં ? ઊતરતા થા આપણે સ્થાનકવાસી, લાભુબેન ને આ મકાન આપણે ઊતરતા 'તા. પારેખનું મકાન, પારેખનું મકાન નથી ? ત્યાં ઊતરતા 'તા એની પાછળ મકાન છે એના બાપનું. આહા !

આ વસ્તુ જુદી બાપુ કીધું આંહી કહેતે હૈ કિ બે પ્રકાર પરોક્ષ ને પ્રત્યક્ષ એસા જ્ઞાન કરનેમેં આતા હૈ. પણ વો બાત અપના સ્વરૂપમેં જાનેમેં ઉસકી કોઈ મદદ નહીં. આહાહા ! ઉસકો ભી ગૌણ કરકે, હૈ ? એક જીવકે સ્વભાવકા અનુભવ કરનેપર એ જૂઠા હૈ. આહાહાહા ! યે પ્રમાણકી વ્યાખ્યા કિયા. નયકી વ્યાખ્યા કરેગા. ( શ્રોતા:- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ ).